SRI JIN KANTISAGARSURI SMARAK TRUST
जहाज मंदिर, मांडवला–343042 जिला–जालोर राज. दूरभाषः 02973–256107 / 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in / jahajmandir99@gmail.com

तीर्थंकर परमात्मा श्री महावीर के निर्वाण कल्याणक व गणधर श्री गौतमस्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति से पावन यह मंगलमय दीपावली पर्व आप सभी के जीवन में ज्ञान रूपी रोशनी का संचार करें...

प्रेस विज्ञप्ति

नवप्रभात परमात्म-प्रेम

0 उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

कदम मंदिर की ओर बढ गये हैं। परमात्मा की भक्ति कर रहा हूँ। अकेला हूँ। स्तवन गा रहा हूँ। धीमी आवाज में गा रहा हूँ। मैं ही गाने वाला हूँ... मैं ही सुनने वाला हूँ! पर आज हृदय गा रहा है। आज ही तो सही रूप से जाना है कि मेरे परमात्मा कैसे है!

सुनता तो हमेशा था। पर समझ पहली बार आया। भक्ति भी बहुत की थी, पर आज का अनुभव अलग था। हमेशा मंदिर आता था, पर कुल परम्परा के कारण! कुछ मांगने...! अपने संसार को को सुखी बनाने की प्रार्थना लिये...!

पर आज भावों की नई दुनिया में मैंने प्रवेश किया था। आज भक्ति का रंग अनूठा था। लगता था कि मैं ही बदल गया हूँ।

क्योंकि आज ही मुझे परमात्मा के दिव्य स्वरूप का बोध हुआ है। ऐसे परमात्मा को पाकर आज मैंने परम धन्यता का अनुभव किया है। आज मेरे अन्तर में प्रेम प्रकट हुआ है। परमात्मा को एकटक देख रहा हूँ। पलक को झपकाना अच्छा नहीं लग रहा है। मन करता है देखता रहूं अनंत काल तक!

प्रेम तो संसार में मैंने कईयों से किया था। पर मेरा मन जानता है कि करता कम था, पाने की चाह ज्यादा थी। अपेक्षाओं की विशाल दुनिया मेरे मन में थी। जिनसे प्रेम करता था, उनसे ज्यादा चाहता था। नहीं मिलता तो रोष होता... मेरी इच्छा के अनुसार नहीं मिलता तो मन उसे ठुकरा भी देता।

उस प्रेम में स्वार्थ और सौदा था। यह आज जाना था। आज जाना था कि प्रेम करने योग्य केवल और केवल परमात्मा है। परमात्मा के सिवाय ऐसा कोई व्यक्ति या तत्व नहीं है, जिनसे प्रेम किया जा सके।

क्योंकि परमात्मा का प्रेम मेरी अपेक्षाओं से कई गुणा मुझ पर बरस रहा है। मैं प्रेम नहीं करता था, तब भी उनका प्रेम तो मुझे प्राप्त ही था।

और मेरा रोम रोम परमात्मा की भक्ति में डूब गया है। मुझे श्रेणिक महाराजा का वह उदाहरण याद आया है। स्वर्गवास के बाद जब उनका अग्निसंस्कार हो रहा था। हड्डियां जब चटक रही थी, तब उनमें से वीर वीर की ध्वनि आ रही थी।

मैं सोचता हूँ- परमात्मा महावीर के प्रति क्या प्रेम होगा..! क्या भक्ति होगी..! और मैं प्रार्थना करता हूँ- प्रभो! मुझे ऐसा प्रेम देना... ऐसी भक्ति देना...!

जटाशंकर

0 उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

स्कूल में अध्यापक ने छात्रों को माता पिता के प्रति भक्ति का पाठ पढाया था। माता पिता के उपकारों की व्याख्या करके उनके प्रति श्रद्धा जगाने का प्रयास किया था। श्रवणकुमार का उदाहरण सुना कर माता पिता की हर आज्ञा मानने का उपदेश दिया था।

उसने छात्रों से पूछा– माता पिता की आज्ञा मानते हो कि नहीं!

कई बच्चों ने उत्तर देने की मुद्रा में अपना हाथ ऊपर उठाया।

अध्यापक ने जटाशंकर से कहा– तुम बताओ!

जटाशंकर तुरंत बोला– मैं तो अपने माता पिता की आज्ञा दुगुनी मानता हूँ।

दुगुनी शब्द सुनकर अध्यापक विचार में पड गया। कोई भी आज्ञा दुगुनी कैसे मानी जा सकती है!

पूछा– दुगुनी से क्या तात्पर्य है तुम्हारा!

जटाशंकर मासुमियत से बोला– मां कहती है– आधी मिठाई खाना। पर मैं उनकी आज्ञा को दो गुना करते हुए मिठाई पूरी खा जाता हूँ।

सुनकर पूरी कक्षा ठहाके मार कर हँसने लगी।

हमारे अन्तर में यह विचार होना चाहिये कि हम जिनाज्ञा का कितना पालन करते हैं। या अपने स्वार्थ के लिये जिनाज्ञा की व्याख्या अपने मन मुताबिक करने लग जाते हैं! जिनाज्ञा का अक्षरशः पालन करना ही धर्म है। न कम, न ज्यादा!

इचलकरंजी में पंचाह्निका महोत्सव

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया गुरुवर्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म0.ण की परम पावन निश्रा में चातुर्मास में हुई मासक्षमण, सिद्धि तप, वीशस्थानक तप आदि विविध तपाराधना के उपलक्ष्य में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया।

ता. 2 सितम्बर 2014 को मणिधारी दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। गुणानुवाद के बाद दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। ता. 3 से 7 सितम्बर तक पंचाह्निका महोत्सव आयोजित हुआ। ता. 3 को अठारह अभिषेक, 4 को महावीर स्वामी षट्कल्याणक पूजा, 5 को श्री पंचपरमेष्ठी पूजा पढाई गई। ता. 6 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। दोपहर में श्री अर्हद् अभिषेक महापूजन का अनूठा आयोजन किया गया। ता. 7 को तपस्वियों का बहुमान एवं दोपहर में श्री वर्धमान शक्रस्तव महापूजन पढाया गया। इन दोनों महापूजनों को शास्त्रीय विशिष्ट रागों में पढाने हेतु सुप्रसिद्ध श्रावकवर्य साधक प्रवर श्री विमलभाई शाह कडी वाले मुंबई से पधारे थे।

संगीतकार विनीत गेमावत की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

चौथे दादा गुरुदेव को याद किया

अकबर प्रतिबोधक चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की 401वीं पुण्यतिथि पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के सानिध्य में ता. 10 सितम्बर 2014 को मनाई गई। इस अवसर पर पूज्य उपाध्यायश्री ने, पूज्य मनितप्रभसागरजी म. एवं पू. मेहुलप्रभसागरजी म. ने गुरुदेव के गुणगान किये। उनके दिव्य तेजोमयी व्यक्तित्व की चर्चा की।

इस अवसर पर रमेश लूंकड, संपतराज संखलेचा, बाबुलाल मालू ने भी गुणगान किये। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

इचलकरंजी में 45 आगम वांचना

पर्वाधिराज पर्युषण आराधना के पश्चात् 45 आगमों की वांचना श्रृंखला चल रही है। पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री आगमों की विशिष्ट व्याख्या करते हुए रहस्य समझाते हैं। प्रवचन श्रवण के लिये पर्युषण के पश्चात् भी लोग बडी संख्या में दौडे आते हैं। ऐसा आभास ही नहीं होता कि पर्युषण पूर्ण हो गये हैं।

बाहर से विनंती करने हेतु विभिन्न संघों का आगमन हो रहा है। प्रतिदिन शताधिक अतिथिगणों का नियमित आगमन हो रहा है। इचलकरंजी संघ उनका तत्परता के साथ बहुमान पूर्वक स्वागत कर रहा है।

नवपदजी की ओली का प्रारंभ 30 सितम्बर से हुआ है। जिसका लाभ श्री दीपचंदजी तलेसरा परिवार ने लिया है।

कोयम्बतूर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 2 फरवरी को

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में कोयम्बतूर नगर में नवनिर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा माघ सुदि 14 ता. 2 फरवरी 2015 को संपन्न होगी। इस मंदिर दादावाडी में परमात्मा स्तंभन पार्श्वनाथ परमात्मा की 51 इंच की प्रतिमा के अलावा दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की 41 इंची तथा नाकोडा भैरव, पद्मावती, अंबिकादेवी एवं सरस्वती देवी की 31 इंची प्रतिमाऐं बिराजमान होगी।

इस मंदिर दादावाडी का संपूर्ण निर्माण स्वद्रव्य से मूलतः फलोदी वर्तमान में कोयम्बतूर श्री विजयचंदजी झाबक सौ. पारसमणि देवी पुत्र कुशल झाबक परिवार की ओर से किया गया है। उन्होंने सपरिवार इचलकरंजी पहुँच कर वहाँ बिराजमान पूज्यश्री से प्रतिष्ठा कराने व शुभ मुहूर्त्त फरमाने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 2 फरवरी को शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

चेन्नई में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 अप्रेल को

चेन्नई नगर की धन्य धरा पर श्री धर्मनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 26 अप्रेल 2015 को अत्यन्त उल्लास के साथ संपन्न होगी।

चेन्नई में श्री धर्मनाथ परमात्मा से सुशोभित का यह मंदिर सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले मंदिरों में गिना जाता है। इसका निर्माण पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. द्वारा स्थापित श्री जिनदत्तसूरि मंडल द्वारा करवाया गया था। अभी उस मंदिर का पूरा जीर्णोद्धार करवाया जा रहा है। मूलनायक परमात्मा का उत्थापन नहीं करवाया गया है। नीचे अभिनव गर्भगृह का निर्माण किया गया है जिसमें परमात्मा धर्मनाथ प्रभु, दादा गुरुदेव आदि की प्रतिमाऐं बिराजमान की जायेगी।

प्रतिष्ठा की विनंती व मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये श्री जिनदत्तसूरि मंडल इचलकरंजी में बिराजमान पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा। और अंजनशलाका प्रतिष्ठा चातुर्मास आदि की भावभरी विनंती की। अंजनशलाका प्रतिष्ठा की विनंती स्वीकार करते हुए वैशाख सुदि 8 ता. 26 अप्रेल 2015 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। सकल संघ में आनंद छा गया।

कन्याकुमारी में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 27 फरवरी को

देश के दक्षिणी किनारे का सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल कन्याकुमारी में लम्बे समय से जिन मंदिर बनाने की चर्चा चल रही थी। यहाँ भ्रमण आदि के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 6 लाख से अधिक जैन बंधुओं का आगमन होता है। परन्तु जैन मंदिर नहीं होने के कारण वे परमात्म दर्शन से वंचित रहते थे। इस कारण यहाँ जिन मंदिर का निर्माण अत्यन्त जरूरी था। इस कार्य को हाथ में लिया चेन्नई निवासी श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने! वहाँ भूखण्ड प्राप्त करने के प्रयत्न करना प्रारंभ किया।

तभी पता चला कि वहाँ एक भूखण्ड मदुराई निवासी श्री बगदावरमलजी के पास उपलब्ध है। उनसे संपर्क किया गया। उन्होंने भी मदुराई संघ के साथ मिल कर जिन मंदिर आदि निर्माण के लक्ष्य से ही यह भूखण्ड कुछ वर्षों

पहले खरीदा था।

उन्होंने यह विशाल भूखण्ड श्री जैन तीर्थ संस्थान रामदेवरा ट्रस्ट को सुपुर्द कर दिया। संस्थान के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने कडी मेहनत करके वहाँ जिनमंदिर निर्माण करने की सरकारी अनुमति प्राप्त की। ता. 14 मार्च 2014 को खात मुहूर्त्त व शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त हुआ। सुप्रसिद्ध सोमपुरा विनोद शर्मा ने सुन्दर मानचित्र तैयार किया। बहुत ही कम समय में श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर का निर्माण कार्य पूर्णाहुति की ओर अग्रसर है। धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय, प्याऊ आदि का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

संस्थान द्वारा इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. से भावभरी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने फाल्गुन सुदि 7 ता. 27 फरवरी 2015 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। समारोह का प्रारंभ 24 फरवरी से होगा। ता. 26 फरवरी को शोभायात्रा का आयोजन होगा।

प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर बाहर से हजारों लोगों के पधारने की संभावना है। प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक बनाने के लिये ट्रस्टी श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री राजेश गुलेच्छा आदि पूर्ण रूप से जुट गये हैं।

जहाज मंदिर में गौशाला बनेगी

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर मांडवला में गौशाला खोलने का निर्णय किया गया है। इसके लिये 15-20 बीघा विशाल भूखण्ड खरीदा जायेगा। जहाँ गोशाला का प्रारंभ किया जायेगा।

इस आशय का निर्णय पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में जहाज मंदिर ट्रस्ट मंडल की ता. 15 सितम्बर 2014 को संपन्न हुई बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी ने की।

गौशाला के संचालन के लिये ट्रस्ट के मंत्री श्री सूरजमलजी देवडा धोका के संयोजनत्व में समिति का गठन किया गया। जिसमें श्री द्वारकादासजी डोसी, श्री रामरतनजी छाजेड, श्री पारसमलजी बरडिया को सम्मिलित किया गया। इस बैठक में महामंत्री डॉ. यू.सी. जैन ने बताया कि जहाज मंदिर में कांच का अनूठा कार्य चल रहा है। सभी यात्री मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं।

मूर्ति भण्डार का कार्य पूर्ण हो चुका है। मैदान में पेवर ब्लॉक लगाने का कार्य भी पूर्ण हो चुका है। पेढी के सामने विशाल बगीचा लगाने का कार्य प्रारंभ है। जहाज मंदिर के प्रवेश द्वार पर संगमरमर के उत्तम पाषाण के कारीगरी युक्त तोरणद्वार का कार्य पूर्ण हो चुका है।

आगामी योजना की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सुलभ शौचालय का नवनिर्माण शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा। इसके साथ ही पेढी के पास एक नया उपाश्रय, चारदीवारी के सौन्दर्यकरण का कार्य एवं स्टाफ क्वार्टर का कार्य भी शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा।

उन्होंने बताया कि यात्रियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। भोजनशाला आदि का कार्य पूर्ण रूप से संतोषजनक है। जहाज मंदिर में चल रहे निर्माण कार्य के प्रति संतोष व्यक्त किया गया।

गज मंदिर केशरियाजी की बैठक संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 13 सितम्बर 2014 को श्री जैन श्वेताम्बर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, केशरियाजी की संचालन समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी बोहरा ने की। ट्रस्ट के महामंत्री श्री गजेन्द्रजी भंसाली ने गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गज मंदिर का कार्य प्राय: पूर्ण होने को है। अठारह हाथियों पर अंबाडी का कार्य चल रहा है। गज मंदिर के प्रदक्षिणा पथ में बने 25 मंदिरों में पिछवाई का कार्य प्रारंभ होना है। यह पिछवाई चित्रकारी द्वारा बनवाई जायेगी।

गज मंदिर में नीचे दादावाडी परिसर में चारों ओर प्रदक्षिणा पथ में श्री केशरियानाथ परमात्मा के केसरियाजी तीर्थ में प्रकट होने के इतिहास पर आधारित प्रदर्शनी बनाने का निर्णय किया गया। श्री

केशरियाजी–अहमदाबाद मुख्य मार्ग पर केशरियाजी से 15 किलोमीटर की दूरी पर खेरवाडा में विहार धाम बनाने का निर्णय किया गया। इसके लिये आवश्यक भूखण्ड क्रय किया जा चुका है। साथ ही गज मंदिर परिसर के पास ही पूर्व में लिये गये विशाल भूखण्ड के पास भविष्य की योजनाओं के लिये प्राप्त हो रहे विशाल भूखण्ड को खरीदने का तय किया गया।

गज मंदिर की आवास, भोजन आदि व्यवस्थाओं पर पूर्ण रूप से संतोष व्यक्त किया गया। गज मंदिर बनने के बाद केशरियाजी पधारने वाले यात्रियों की संख्या में शत गुणा अभिवृद्धि हुई है। इसके साथ ही देवीकोट जिन मंदिर जीर्णोद्धार, बिजयनगर पार्श्वनाथ मंदिर, चित्तौड पार्श्वनाथ मंदिर में 5–5 लाख रूपये अर्पण करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

खरतरगच्छ पेढी की बैठक संपन्न

श्री जिनदत्त–कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी समिति की बैठक पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 14 सितम्बर को पेढी के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें दादावाडी जीर्णोद्धार/निर्माण हेतु आये हुए निवेदन पत्रों पर विचार करके अनुदान अर्पण करने का निश्चय किया गया।

श्री पुरूषोत्तदासजी शंकरलालजी सेठिया, बालोतरा–बाडमेर वाले पेढी के नये सदस्य बने। उन्हें धन्यवाद अर्पण किया गया। मेडतासिटी की दादावाडी के जीर्णोद्धार के संबंध में संघवी श्री विजयराजजी डोसी को जिम्मेदारी सौंपी गई। साबला में पहाडी पर स्थित 600 वर्ष प्राचीन मणिधारी दादा गुरूदेव जिनचन्द्रसूरि की चमत्कारी दादावाडी के जीर्णोद्धार के संबंध में श्री गजेन्द्रजी भंसाली ने बताया कि वहॉं एक लाख वर्गफीट के भूखण्ड पर चारदीवारी का कार्य पूर्ण हो चुका है। जीर्णोद्धार का कार्य अब प्रारंभ होगा।

श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, पालीताना की बैठक

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री विजयराजजी डोसी की अध्यक्षता में ता. 13 सितम्बर 2014 को इचलकरंजी नगर में मणिधारी भवन में श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट की मीटींग संपन्न हुई। वार्षिक लेखा जोखा पारित किया गया।

मुख्य द्वार पर बने उपाश्रय के ऊपर एक हॉल ज्ञान मंदिर के रूप में बनाने का निर्णय किया गया। महामंत्री बाबुलाल लूणिया ने वहॉं पर्युषण महापर्व पर हुई आराधना और वहॉं चल रहे वैयावच्च के कार्यों की जानकारी दी।

कुशल वाटिका की मीटींग संपन्न

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से संस्थापित श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान, कुशल वाटिका बाडमेर की बैठक पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 14 सितम्बर 2014 को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड ने की। बैठक में बडी संख्या में ट्रस्टी उपस्थित थे।

संस्थान के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड ने बताया कि कुशल वाटिका में दर्शनार्थियों की संख्या लगातार बढ रही है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्थाओं से तीर्थ की प्रसिद्धि लगातार बढ रही है। हर शनिवार को एक हजार से अधिक यात्रियों का आगमन होता है। पर्युषण महापर्व के दिनों में तीन हजार लोगों का प्रतिदिन आगमन हुआ।

मूलनायक परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी की रजत–स्वर्ण–रत्न जड़ित भव्य आंगी बनाई गई। जिसकी अपनी अनूठी आभा से वातावरण दैदीप्यमान हो उठा।

महामंत्री मांगीलाल मालू ने बताया कि जिन मंदिर का कार्य पूर्ण हो चुका है। मंदिर के बाहर के परिसर में मकराने की फर्श बन चुकी है। जिन मंदिर में रत्नमय–गलीचे का कार्य पूर्ण हो चुका है। दादावाडी व अन्य मंदिरों में गलीचे का ऑर्डर दिया जा चुका है।

दादा गुरुदेव की 52 फीट 4 इंच की विशाल प्रतिमा बनाने हेतु विचार विमर्श किया गया। निर्णय किया गया कि प्रतिमा पाषाण से ही निर्मित की जायेगी। इसके लिये कोटेशन मंगाये गये हैं। चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। छात्रावास का कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है।

अगले सत्र से छात्रावास का विधिवत् प्रारंभ कर दिया जायेगा। इस छात्रावास में पांचवीं कक्षा और इससे ऊपर के छात्रों को लिया जायेगा। प्राइमरी व मिडिल स्कूल का कार्य प्रशंसनीय चल रहा है। अभी 900 से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आगे की योजनाओं के अन्तर्गत भक्ति आश्रम की योजना को कार्यान्वित करने का निश्चय किया गया।

दिल्ली महानगर पर्युषण महापर्व की आराधना

खरतरगच्छ भवन के प्रांगण में पर्युषण पर्वाराधना में अष्टकर्म निवारण तप व मोक्ष तप हुआ। जन्मवांचन के लिये चौदह स्वप्नावतरण, बोलियां आशातीत रूप से हुई। बालिकाओं द्वारा एक-एक स्वपन का नृत्य, उसकी महिमा का वर्णन हुआ। कोलकता से पर्युषण पर्व की आराधना हेतु आये श्री अरूणजी मुकीम, सिद्धार्थ महाराजा व उनकी पत्नि त्रिशला महाराणी बनी। पुत्र जन्म बधाई पर सिद्धार्थ महाराजा ने प्रियंवदा को उपहार दिया।

संवत्सरी महापर्व के दिन पुरूष वर्ग में पौषध हुये। साध्वी प्रीतियशाश्रीजी म. ने बारासौ मूल सूत्र का वांचन व सारांश बताया। अट्ठाई की तपस्या वालों का बहुमान करने का लाभ निहालचन्दजी चोपड़ा हालावालों ने लिया। सामुहिक चैत्यपरिपाटी चांदनी चौक में स्थित चारों जिनालय में दर्शन विधि की। तप पारणा का लाभ सोहनलालजी हीरालालजी मुसरफ ने लिया।

मुमुक्षु सुश्री शिल्पा बालड का अभिनन्दन

पूज्या गुरूवर्याश्री की निश्रा में संयम ग्रहण करने वाली सुश्री शिल्पा मीठालालजी बालड, गढ़ सिवाना-बल्लारी का अभिनन्दन एवं तपस्वियों का बहुमान समारोह दि. 5 सितम्बर 2014 को किया गया। सुश्री शिल्पा का खरतरगच्छ समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र द्वारा बहुमान हीरालालजी सुमनजी मुसरफ ने किया। मणिधारी विचक्षण महिला मंडल, हाला संघ, यमुना पार संघ, बाड़मेर संघ, दिल्ली की ओर से भी दीक्षार्थी बहिन का अभिनन्दन किया गया।

पू. गुरूवर्याश्री ने शिल्पा को सम्बोधन करके कहा कि उत्कृष्ट चारित्र पालन करके अपने लक्ष्य को पाना। दीक्षार्थी बहिन ने अपने उद्बोधन में संयम की महता बताई। उसने कहा कि यह पू. गुरूवर्याश्री की वैराग्य वाणी का ही सुफल है। मेरी दीक्षा दि. 15 दिसम्बर 2014 को परम पूज्य उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में बल्लारी (कर्नाटक) में आप पधार कर आशीर्वाद प्रदान करें। कार्यक्रम के पश्चात साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन घेवरिया परिवार की ओर से हुआ। दोपहर 2 बजे संयम की सांझी रखी गई।

श्री भक्ताम्बर महापूजन सम्पन्न

पूज्य श्री की पावन निश्रा में ता. 14.9.2014 को भक्तामर महापूजन किया गया। सामूहिक जोड़ों से पूजा में मुख्य यंत्र पर पूजा करने का व स्वामिवात्सल्य का लाभ श्री सोहनलालजी हीरालालजी मुसरफ परिवार ने लिय। पूजा पढ़ाने विधिकारक मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण पधारे। इस अवसर पर पार्श्वमणि तीर्थ का ट्रस्ट मंडल भी आया।

मुंबई में महाचमत्कारी दादा गुरुदेव महापूजन का आयोजन

धर्म नगरी मुंबई में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में श्री मणिधारी युवा परिषद्, मुंबई द्वारा पू. साध्वीरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा की शिष्या पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., साध्वी प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में महाचमत्कारी दादा गुरुदेव महापूजन का भव्य आयोजन 17 अगस्त 2014 को मोरारबाग वाडी में किया गया।

इस अवसर पर पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. द्वारा संकलित **दादा गुरुदेव की पूजा** पुस्तिका का विमोचन सुश्री मंजूजी लोढा, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के संस्थापक अध्यक्ष प्रकाशजी कानुगो, अध्यक्ष मांगीलालजी शाह, महामंत्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी, संघवी मुकेश मरडिया आदि द्वारा किया गया।

महापूजन की मुख्य विधि पूज्य गुरुवर्याश्रीजी के द्वारा करवायी गयी। इस महापूजन में 54 जोडों ने हिस्सा लिया। जिन्हें सम्पूर्ण पूजन सामग्री के साथ यंत्र एवं चारों दादा गुरुदेव की सुंदर तस्वीर भेंट की गयी। शहर के कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। गौरतलब है कि परिषद् पिछले 12 वर्षों से अविरत यह आयोजन हर साल करती आ रही है।

कार्यक्रम में स्वामी वात्सल्य एवं मुख्य पीठिका पर विराजमान का लाभ बाडमेर निवासी श्री चम्पालालजी रिखबचंदजी श्रीश्रीमाल परिवार देवडा वालों ने लिया।

परिषद् के अध्यक्ष संघवी मुकेश मरडिया द्वारा पूजन में पधारे समस्त महानुभावों को धन्यवाद दिया।

–प्रेषक धनपत बी. कानुंगो

बिजापुर में परमात्म भक्ति महोत्सव

महत्तरा पद विभूषिता पूज्या श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. की पावन निश्रा में बिजापुर में पूज्या सिद्धितप आराधिका साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. के तप अनुमोदनार्थ, विविध तप एवं महत्तरा पद विभूषिता पूज्या श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 26 वीं पुण्यतिथि के निमित्त पंच दिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव उल्लास पूर्वक संपन्न हुआ।

ता. 31.8.2014 को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी शा. रतनचंदजी वीरचंदजी देवडा धोका, मरुधर में गढ़ सिवाना, ता. 1.9.2014 को बारह व्रत पूजा लाभार्थी श्री पार्श्वजिन सामायिक मंडल, बिजापुर द्वारा, ता. 2.9.2014 सामूहिक वीस स्थानक आराधना सह वीस स्थानक पूजन लाभार्थी शा. वी. जी. पारेख एण्ड ब्रदर्स, मरुधर में समदड़ी, ता. 3.9.2014 को तपस्वीयों का वरघोड़ा, गुणानुवाद व नियमसहित 26 लक्की ड्रा निकाले गये। दोपहर में नवांगी टीकाकार प.पू. श्री अभयदेवसूरि रचित स्थंभन पार्श्वनाथ स्तोत्र जयतिहुअण महापूजन लाभार्थी शा. संघवी जी.पी. पोरवाल, मरुधर में दयालपुरा की तरफ से आयोजित हुआ।

ता. 4.9.2014 दादा गुरुदेव महापूजन लाभार्थी शा. पारसमलजी धनराजजी धारीवाल, मरुधर में गढ़ सिवाणा द्वारा पढाया गया।

चौहटन में उपधान तप

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. और पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में धर्मधरा चौहटन नगरी में चार्तुमासिक आराधना का जोरदार माहौल बना हुआ है।

मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व मनीषप्रभसागरजी म. की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ चौहटन में उपधान तप की आराधना का निर्णय किया गया। इस हेतु श्री कुशल कान्ति उपधान तप समिति का गठन किया गया है। श्री बाबुलालजी सेठिया को संयोजक बनाया गया है।

उपधान आराधना का मुहुर्त्त प्राप्त करने हेतु श्रीसंघ का प्रतिनिधि मंडल इचलकरंजी में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के सानिध्य में पहुंचा। पूज्य उपाध्याय श्री ने उपधान तप में सभी को जप–तप–आराधना एवं स्वाध्याय में जुड़े रह कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का उपदेश देते हुये उपधान तप प्रथम प्रवेश मिगसर वदि 12 दि. 19-11-2014 व द्वितीय प्रवेश मिगसर वदि 14 दि. 21-11-2014 व माला का मुहुर्त्त माघ वदि 2 दि. 07-01-2015 का शुभ मुहुर्त्त प्रदान किया।

आराधना के इच्छुक जन 070739 00641 एवं 094614 89609 पर संपर्क करें।

तिरुपातुर से कृष्णगिरि व सुशीलधाम का
श्री पार्श्व जिनदत्त कुशल छःरी पालक संघ का आयोजन

पूजनीया धवल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं साध्वी श्री मयुरप्रियाश्रीजी म., साध्वी श्री तत्त्वज्ञलताश्रीजी म., साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. की पावन निश्रा में तिरुपातुर में आराधनामय चातुर्मास गतिमान है। तपस्या के कीर्तिमान को देख सकल संघ गद्गद् है।

इसी कडी में गुरुभक्त परिवार आयोजित तिरुपातुर नगर से कृष्णगिरि व सुशीलधाम तक का श्री पार्श्व जिनदत्त कुशल छःरी पालक संघ का आयोजन किया जा रहा है। इस उपलक्ष में तिरुपातुर में दि. 09.11.20104 को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया है। दि. 10.1102014 को बाजते गाजते संघ का प्रयाण होगा। दि. 12.11.2014 को यह संघ कृष्णगिरि पहुंचेगा। जहां महापूजन एवं भक्ति महोत्सव आयोजित होगा। छःरी का पालन करते हुये दि. 16.11.2014 को बेंगलोर स्थित श्री सुशीलधाम में पहुंचकर संघ की पूर्णाहुति होगी।

- आर.सुषमा कवाड़

तिरूपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 जनवरी को

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल की पावन निश्रा में तिरूपुर (तमिलनाडु) में श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा माघ सुदि 7 सोमवार ता. 26 जनवरी 2015 को निश्चित की गई है।

तिरूपुर से श्री पार्श्व कुशल जैन सेवा समाज के तत्वावधान में बने इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा की विनंती करने एवं मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये तिरूपुर संघ ता. 28 सितम्बर को पूज्यश्री की सेवा में इचलकरंजी पहुँचा। पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर 26 जनवरी का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त झेलने का लाभ समाज के अध्यक्ष श्री रमेशजी संखलेचा ने प्राप्त किया।

पूजनीया साध्वीश्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से इस मंदिर दादावाडी का निर्माण शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है।

हॉस्पेट में उद्घाटन 12 दिसम्बर को

हॉस्पेट नगर में एम. जे. नगर में श्री वासुपूज्य मंदिर के पास श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का निर्माण मोकलसर निवासी श्री गिरधारीलालजी शेराजी पालरेचा परिवार द्वारा किया गया है। जिसका उद्घाटन 12 दिसम्बर 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में किया जायेगा।

परिवार के श्री बाबुलालजी पालरेचा परिवार ने पूज्यश्री से विनंती की, जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने यह मुहूर्त्त प्रदान किया।

श्री वासुपूज्य मंदिर का निर्माण भी इस परिवार द्वारा करवाया गया था, जिसकी प्रतिष्ठा पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा संपन्न हुई थी।

श्री जिन कुशल अकादमी, दुर्ग

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, दुर्ग के तत्त्वावधान में जैन समाज के युवक-युवतियों को कंप्युटर ज्ञान एवं एकाउटिंग-टैली के प्रशिक्षण हेतु श्री जिनकुशल अकादमी की स्थापना की गयी।

अकादमी का शुभारंभ दि. 28-09-2014 को किया गया। इस पावन अवसर पर समाज के वरिष्ठ लोगों की उपस्थिति व पूज्या साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा प्राप्त हुयी।

अकादमी की जिम्मेदारी सी.ए. श्रीपाल कोठारी, सी.ए. पदम बरडिया और सी.ए. मिनेश छाजेड को दी गयी।

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

-उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

पूज्य गुरुदेवश्री के लघु गुरू-भ्राता पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म.सा. ने पहले तपागच्छ में दीक्षा ग्रहण की थी। कारणवश उन्होंने तपागच्छ छोडा था। पर उनका मन गृहस्थ दशा में जाने का नहीं था। वे योग्य गुरू की

तलाश में लगे। घुमते घुमते वे वि.सं. 2002 में पूज्य गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी म.सा. के पास पहुँचे। कुछ दिन उनके पास रहे तो उन्हें लगा कि उनकी तलाश पूरी हुई।

और उन्होंने पूज्यश्री से दीक्षा प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने अपने गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पास समाचार भेजे। पूज्य आचार्यश्री की अनुमति प्राप्त कर उन्होंने उन्हें दीक्षा प्रदान की। तपागच्छ की दीक्षा-पर्याय का विच्छेद कर पुनर्दीक्षा से पर्याय का क्रम प्रारंभ हुआ।

वे पूज्य गुरुदेवश्री के शिष्य बनना चाहते थे। परन्तु पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- मेरे गुरुदेव बिराजमान है। उनकी आज्ञा से मैं दीक्षा दे दूंगा पर शिष्य तो मैं पूज्य गुरुदेवश्री का ही बनाऊँगा। क्योंकि हमारे समुदाय की यह परम्परा है कि गुरू के बिराजमान रहते शिष्य कभी भी अपना शिष्य नहीं बनाता।

पूज्य गुरुदेवश्री ने उन्हें अपना गुरु भ्राता बनाया। पर शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। यह पूज्यश्री का विनय था, लघुता थी।

पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म.सा. ने पूज्यश्री के प्रति अपना शिष्यत्व भाव ही दर्शित किया। उनका विनय हम सब के लिये आदर्श प्रेरणा रूप था।

नंदुरबार में मणिधारी बालिका परिषद् की स्थापना

नंदुरबार में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में पूजनीया बहिन म.डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बालिकाओं का एक संगठन गठित किया गया। जिसका नाम रखा गया है- श्री मणिधारी बालिका परिषद्!

इस अवसर पर पूजनीया बहिन म.डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा- संगठन में अपार शक्ति है। बालिकाओं का संगठन अपने आप में आदर्श है। इससे उन्हें सामूहिक संस्कारों के दिव्य वातावरण में जीने का उत्तम अवसर प्राप्त होता है। साथ ही अपनी योग्यता और क्षमता को प्रकट करने का भी मौका मिलता है।

इस अवसर पर श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल ने परिषद् के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए समाज की ओर से हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

तपस्या निमित्त पंचाह्निका महोत्सव आयोजित हुआ

बाड़मेर के जिन कांतिसागरसूरि आराधना भवन में श्री दादा गुरूदेव इकतीसा के सामूहिक पाठ अनुष्ठान की स्थापना पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या प.पू. सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की पावन निश्रा में खरतरगच्छ संघ व चातुर्मास लाभार्थी शांतिलाल नीरजकुमार छाजेड़ परिवार की उपस्थिति में 06 सितम्बर को हुआ। आराधना भवन के प्रांगण में गुरूदेव दरबार सजाया गया। उसके सम्मुख बैठकर प्रत्येक श्रद्धालु द्वारा 11 बार प्रतिदिन पठन किया गया।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री संवेगप्रज्ञाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. के मासक्षमण तथा पर्युषण पर्व पर सम्पन्न हुई सिद्धि तप, अट्ठाई आदि विविध तपाराधना के उपलक्ष्य में श्री जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन में गुरूवर्या सौम्यगुणाश्रीजी म. की निश्रा में 17 सितम्बर से 21 सितम्बर तक पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन हुआ। भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिदिन दिन में पूजा व महापूजन एवं रात्रि में भक्ति भावना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

बाडमेर में चातुर्मास का अनोखा ठाट लगा है। प्रवचन आदि हर कार्यक्रम में विशाल उपस्थिति रहती है।

प्रेषक - जहाज मंदिर कार्यालय